International Journal of Applied Research 2023; 9(11): 202-203

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2023; 9(11): 202-203
www.allresearchjournal.com
Received: 11-09-2023
Accepted: 16-10-2023

पंचम खण्डेलवाल
व्याख्याता, चित्रकला विभाग, राज. सी. सै. विद्यालय, पीपलू (टोंक) राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
पंचम खण्डेलवाल
व्याख्याता, चित्रकला विभाग, राज. सी. सै. विद्यालय, पीपलू (टोंक) राजस्थान, भारत

छापा कला – एक परिचय

पंचम खण्डेलवाल

सारांश
कला और समाज या गहरा सम्बन्ध होता है, समाज में विभिन्न धर्मों के लोग रहते हैं तथा प्रत्येक धर्म अपने विकास व प्रचार के लिए कला का सहारा लेता है। लिपि के विकास के पश्चात मुद्रण का आविष्कार एवं विकास मानव सभ्यता की एक महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट उपलब्धि थी जिसके कारण मनुष्य को अपने ज्ञान को भावी पीढ़ियों तक विस्तृत रूप से पहुँचाने के लिए साधन तथा संदेश एवं सूचना देने के लिए विभिन्न माध्यम भी उपलब्ध करवाये जो कुछ लोगों तक सीमित न रहकर जन सामान्य तक पहुंचते हैं। छापा कला भी जन संचार के साथ–साथ चित्रकारो की अभिव्यक्ति का एक सर्वमान्य एवं प्रभावशाली तरीका है जिसके विकास में वुडकट एवं लिनो, ड्राईपान्ट, इन्ग्रेविंग, एचिंग, मेजोटेन्ट एवं स्क्वाटिंट, स्टेन्सिल, लिथोग्राफी एवं आफसेट की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

कूटशब्द : स्टैन्सिल, स्क्रिन प्रिन्टिंग, सेरीग्राफ, लेजर, फ्लैक्सोग्राफी, मुद्रण, एचिंग, लिथोग्राफ, ग्राफिक, जाइलोग्राफी, प्रिंट मेकिंग।

प्रस्तावना
मनुष्य ने अपनी भावनाओं व विचारों को व्यक्त करने के लिए सर्वप्रथम भाषा का ही प्रयोग किया चाहे वह किसी भी रूप में हो। तदन्तर उस मानव ने अपनी भावनाओं एवं विचारों को सुरक्षित रखने एवं भावी पीढ़ी को सम्प्रेषित करने के लिए चित्रों (आकृतियों) एवं चिन्हों का प्रयोग प्रारम्भ किया और इन चिन्हों एवं चित्रों से लिपि का विकास हुआ जिसके कारण प्रपत्रों एवं पुस्तकों आदि के जरिये विचारों एवं ज्ञान को सुरक्षित रखा जाने लगा, जिसकी पहुंच कम लोगों तक थी। इसको वृहद रूप देने के लिए मुद्रण का आविष्कार किया गया और कालान्तर में विभिन्न मुद्रण विधाओं जैसे – ऊभरी सतह से मुद्रण (लेटर प्रैस एवं फ्लेक्सोग्राफी) खोदी हुई सतह से मुद्रण (इन्ग्रेविंग एवं ग्रेव्योर), समतल सतह से मुद्रण (लिथोग्राफी एवं ऑफसेट), स्टैन्सिल एवं स्क्रिन प्रिन्टिंग (सेरीग्राफी) तथा आधुनिक लेजर तकनीकों से मुद्रण का विकास हुआ।
सामान्यतः सभी जानते है कि छापाकला (मुद्रण) का तात्पर्य छपाई से है। अर्थात किसी भी सतह पर वैज्ञानिक विधियों (युक्तियों) के समायोजन द्वारा स्पष्ट और सुनियोजित छाप लेने की क्रिया को मुद्रण कहते है। ''किसी भी उपयुक्त सतह पर वैज्ञानिक युक्तियों के समायोजन द्वारा स्पष्ट एवं सुनियोजित छाप लेने की प्रक्रिया को मुद्रण प्रोद्योगिकी कहते है। इस परिभाषा के अनुसार कागज, कपड़ा, प्लास्टिक, शीशा तथा अन्य किसी भी सतह पर तकनीकी युक्तियों द्वारा अधिकतम स्पष्ट एवं मूल प्रति के समरूप छपाई करने को 'मुद्रण' कहते है।'' जिस प्रकार मनुष्य के जीवन में जीने के लिए हवा, पानी एवं भोजन का जितना महत्व है। ठीक उसी प्रकार मानव के दैनिक जीवन में मुद्रण की आवश्यकता एवं महत्व अनुभव किया जाता है। मुद्रण के सहयोग से मानव अपने विचारों एवं संदेश को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक सम्प्रेषित कर सकता है और उसे भविष्य की पीढ़ियों के लिए संजोकर रख सकता है, जो आज मानव समाज एवं कला व विज्ञापन का बहुत महत्वपूर्ण अंग है। मुद्रण माध्यम न केवल मानव के सांस्कृति, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक जगत में सर्वत्र व्याप्त है अपितु धार्मिक क्षेत्र मे भी मुद्रण माध्यमों का बड़ा योगदान है। मुद्रण के प्रारंभ में धार्मिक पुस्तकों का ही मुद्रण अधिक किया जाता था।
आधुनिक युग में मुद्रण एक ऐसा माध्यम बन गया है जो मनुष्य के ज्ञान और विचार की श्रेणीबद्ध रूप में संचारित करते हुए स्थायी बनाता है। पूर्व काल मे छपाई एक सीमित परिवेश में थी। वह मानव की आन्तरिक संतुष्टि के लिए काफी नहीं थी, इसलिए इसमें भी वैज्ञानिक उन्नति के साथ–साथ परिवर्तन जारी है जो लकड़ी के ब्लॉक से प्रारम्भ होकर लैटरप्रेस, लिथोग्राफी, ऑफसेट, ग्रेव्योर, स्क्रीन प्रिन्ट, फ्लेक्सोग्राफी एवं लेजर मुद्रण आदि के रूप में हमारे सामने विद्यमान है।

छापाकला को अंग्रेजी भाषा में 'ग्राफिक आर्ट' कहा जाता है। इसे ग्रीक भाषा में 'ग्राफीकोस' तथा लैटिन भाषा में 'ग्राफीकुस' कहा जाता है। ग्राफी शब्द के साथ अनेक शब्द जुड़े हैं, जैसे– लिथोग्राफी, फोटोग्राफी, जाइलोग्राफी, सेरीग्राफी, कोलोग्राफी आदि। इन सभी माध्यमों द्वारा अक्षर चिन्ह, आकृति, ड्राईंग का अवलेखन होता है। इन माध्यमों मे एक जैसे अनेक छापे बनना आवश्यक है। ग्राफी शब्द के पीछे अवलेखन या पुनरावृत्ति की भावना निहित है। विश्व में ग्राफिक शब्द आज का छापाकला का पर्याय बन गया है। ग्राफिक शब्द ग्रीक भाषा के ग्राफिन शब्द से लिया गया है। जिसका शाब्दिक अर्थ लिखन या अंकन करना है। 'आर्ट' लेटिन भाषा के 'आर्स' का रूप है जिसका अर्थ सौन्दर्य या अभिव्यक्ति को मूर्त रूप देना हैं। सन् 1964 से पहले हर छपे हुए चित्र, व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक प्रयोजन के लिए प्रकाशित की गई कला को 'ग्राफिक आर्ट' कह दिया जाता था, लेकिन जैसे जैसे इसकी जरूरत बदली या इस कला का विकास हुआ तो इन दोनो मे अन्तर करना अनिवार्य हो गया। जैस कि दोनो का उद्देश्य और व्यवहार आपस में एक दूसरे से सर्वथा भिन्न है तो दोनो मे भेद करने के लिए यह आवश्यक हो गया है इसके लिए एक नया नाम खोजा जाए। इस समस्या के समाधान के लिए 'द प्रिन्ट कौंसिल ऑफ अमेरिका' ने सन् 1964 में मूल छापों की एक परिभाषा निश्चित की और धीरे–धीरे ग्राफिक के स्थान पर 'प्रिन्ट मेकिंग' नाम सर्वत्र स्वीकार कर लिया गया और जिसे हिन्दी मे 'छापाचित्रण' कहा गया। अर्थात कलाकार द्वारा मुद्रण माध्यमों द्वारा तैयार की गई मौलिक कलाकृतियों को 'छापाकला' अथवा 'छापाचित्रण' (Graphics OR Printmaking) के अंतर्गत रखा जाता है। कला जगत मे चित्र (तेल चित्र) मूर्ति एवं रेखाकंन की तरह ही छापाकला (प्रिंट मेकिंग) विधा द्वारा निर्मित छापाचित्र भी सृजन के क्षेत्र मे महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इसके माध्यमों की श्रृखंला है, स्वयं के नियम है, वैयाक्तिकता को स्थान है तथा आकारद कला के सभी अनिवार्य तत्वों को स्थान दिया गया है। आज इसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कलाकृति के रूप में स्वीकारा गया हैं। प्रिन्ट मेंकिग सृजन में अत्यधिक लोकप्रिय विधा बनती जा रही है, जिससे अधिक से अधिक मौलिक कलाकृतियां कम से कम मूल्य में प्राप्त की जा सकती हैं। इस प्रकार यह माध्यम जन साधारण की क्रय शक्ति के अनुरूप होने से यह अपना विशेष आकर्षण भी रखता हैं। इस प्रकार छापाकला से अभिप्राय कलाकार द्वारा निर्मित अपनी कल्पनानुरूप धरातल (प्लेट) से मुद्रण स्याही (प्रिटिंग इंक) को धरातल पर लगाकर छापा मशीन (एचिंग, लिथो, ऑफसेट या सरफेस प्रिटिंग) के माध्यम से कागज पर छापा लेना (प्रिंट मेकिंग) हैं।

मूलभूत रूप से छापा चित्रण की चार प्रमुख मुद्रण प्रक्रियाएं है जिनमें कलाकार भिन्न भिन्न विधियों द्वारा स्वयं अपने मुद्रण ब्लॉक का निर्माण करते है और अपने चित्रों के प्रिंट तैयार करते है, जो निम्न प्रकार है :–

1. उभरी सतह से मुद्रण (Relief Printing) – वुडकट एंव लिनों
2. खोदी गई सतह से मुद्रण (Intaglio) – डाईपान्ट, इन्ग्रेविंग, एचिंग, मेजोटेन्ट एवं एक्वाटिन्ट
3. स्टेन्सिल (Stencil) – सैरीग्राफी
4. समतल सतह से मुद्रण (Planography) – लिथोग्राफी (शिलालेखन) एवं ऑफसेट

1. **उभरी सतह से मुद्रण** – उभरी सतह से मुद्रण में चित्र उभरा हुआ होता है जैसा कि रबर स्टेम्प अथवा मोहरों पर होता है। यह कपड़ों पर प्रिन्टिंग की प्राचीनतम ब्लॉक प्रिन्टिंग पद्धति के समान है। इस पद्धति मे वुडकट तथा लिनो आदि प्रमुख प्रक्रिया हैं।
2. **खोदी गई सतह से मुद्रण** – इस प्रक्रिया में धातु की प्लेट में गहरी रेखाऐं (उत्कीर्ण) खुरच कर बनाई जाती है और उनमे स्याही भर दी जाती है। शेष उपरी सतह खाली रहती है जिसे पोंछ कर साफ कर दिया जाता है। तत्पश्चात् कागज को धातु की प्लेट पर दबाया जाता है जिससे वह चित्र जो उत्कीर्ण किया गया वहां से कागज स्याही सोख लेता है। इस पद्धति को मूलतः उत्कीर्णन या अम्ल उत्कीर्णन (एचिंग) कहा जाता है।
3. **स्टेन्सिल द्वारा मुद्रण** – स्टेन्सिल भी मूलतः प्राचीनत मुद्रण विधि है। इस विधि मे समतल सतह कागज या सिल्क स्क्रीन के कपड़े के उपर आकृति की छवि की स्टेन्सिल तैयार की जाती है और उसके पश्चात् स्क्रेपर द्वारा मुद्रण स्याही से नीचे रखे धरातल (कागज) पर छाप ली जाती है। वर्तमान परिष्कृत स्वरूप मे इसका सबसे अधिक प्रचलित एवं लोकप्रिय स्वरूप सिल्क स्क्रीन है जिसे सेरीग्राफी भी कहा जाता है।
4. **समतल सतह से मुद्रण** – मुद्रण की इस प्रक्रिया मे पानी व ग्रीस की एक दूसरे से विपरीत चलने की तकनीकी का प्रयोग किया जाता है। इसे लिथोग्राफी तकनीक कहा जाता है क्योंकि इसमें एक समतल पत्थर का प्रयोग किया जाता है जो पानी व ग्रीस दोनो को समान रूप से सोंखने की शक्ति रखता है। सूख हुए पत्थर पर ग्रीसयुक्त पैन्सिल से चित्र बनाकर सतह को पानी से गीला किया जाता है। लिथोग्राफी की स्याही को रोलर के द्वारा पत्थर की नम सतह पर फैला दिय जाता है, क्योंकि स्याही ग्रीस के कारण तैलीय होती है, इसलिए यह उन्ही स्थानों पर अवशोषित होती है जहाँ ग्रीस पैन्सिल से चित्र बनाया गया है। जब दबाव के साथ कागज सतह पर लगाया है तो उससे चित्र कागज पर स्थानान्तरित हो जाता है। मुद्रण तकनीकों में लिथोग्राफी सबसे सरल व परम्परागत तकनीक है जिसका परिष्कृत स्वरूप ऑफसेट मुद्रण है।

संदर्भ

1. Wood James P. The Story of Advertising, New York; c1950.
2. राही ईश्वर चन्द्र – लेखन कला का इतिहास, प्रथम खण्ड, लखनऊ, 1983
3. मिश्र चन्द्रशेखर–लेटर प्रेस मुद्रण, नई दिल्ली, 1990
4. श्याम शर्मा, काष्ठ छापाकला, पटना, 1999
5. Kurtz Bruce D. Visual Imagination, New Jersy; c1987.
6. मागो प्राणनाथ–भारत की समकालीन कला, नई दिल्ली, 2011
7. कुमार सुनील–भारतीय छापा चित्रकला, आदि से आधुनिक कला तक, दिल्ली 2000
8. Cliffe-Lithography, London; c1965.